इलाज के आभाव में बेमौत मरते थे मरीज़

ईएसआई कॉर्पोरेशन को अपने वेतन से भरपूर अंशदान देने के बावजूद कैंसर जैसे घातक रोगों का कोई इलाज कार्पोरेशन नहीं करता था। न केवल कैंसर बल्कि हृदय रोग व नियरो सर्जरी व अन्य ऐसे ही केसों के लिये कॉर्पोरेशन अपने मरीज़ों को निजी अस्पतालों की बजाय एम्स की ओर धकेल देता था, क्योंकि वहां इलाज बहुत महंगा पड़ता था। एम्स में जब तक उनका नम्बर आता तब तक मरीज चल बसते थे। कॉर्पोरेशन को यह धंधा बढ़िया से रास आ रहा था। मज़दूरों से पैसा लेना तो कॉर्पोरेशन को खूब आता था लेकिन इलाज के नाम पर उन्हें मरने को छोड़ दिया जाता था।

कॉर्पोरेशन की इसी नीति के चलते उसके खजाने में आज 1 लाख 48 हजार करोड़ से अधिक रुपये का ढेर लग गया है। यह तो शुक्र है कि फ़रीदाबाद के इस मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मज़दूरों को अपेक्षाकृत काफ़ी बेहतर सुविधायें उपलब्ध हैं। ये सुविधायें और भी बेहतर हो सकती हैं यदि कॉर्पोरेशन के शीर्ष पर बैठे उच्चाधिकारी यहां पर स्टाफ़ की कमी को पूरा कर दें। विदित है कि जो सेवायें आज यहां उपलब्ध हैं वे केवल आवश्यकता से 40 प्रतिशत कम स्टाफ़ द्वारा दी जा रही हैं।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421

डीजी मुखमीत सिंह व दीपक कुमार इस मेडिकल कॉलेज में सदैव याद रखे जायेंगे

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

ईएसआई कॉर्पोरेशन के महानिदेशक पद पर अब तक अनेकों आईएएस अधिकारी बतौर महानिदेशक तैनात रह कर जा चुके हैं। लेकिन मुखमीत सिंह भाटिया ने इस मेडिकल कॉलेज अस्पताल को कैथलैब देकर मज़दूरों को हृदय रोग सम्बन्धित इलाज की बड़ी सुविधा प्रदान की है। इसके साथ-साथ बोन मैरो ट्रांस्प्लांट तथा न्यूरो सर्जरी जैसी सुपर स्पेशलिटी की सुविधा यहां के मज़दूरों को उपलब्ध कराई है। कैंसर इलाज के लिये आवश्यक रेडियो थेरेपी के तमाम उपकरण आदि खरीदने के लिये 60 करोड़ रुपये न केवल स्वीकृत कर दिये हैं बल्कि इन उपकरणों की खरीदारी के लिये आदेश देने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। आगामी तीन से चार महीनों में पूरी यूनिट स्थापित हो जाने की सम्भावना है। उसके बाद कैंसर इलाज के मामले में यह अस्पताल पूर्णतया सक्षम हो जायेगा।

इस श्रेणी में पूर्व महानिदेशक दीपक कुमार को याद करना भी बनता है जिन्होंने इस मेडिकल कॉलेज को चालू कराने के लिये खुद सुप्रीम कोर्ट तक गुहार लगाई थी। वह एक ऐसा समय था जब ईएसआई मुख्यालय में कब्जा जमाये बैठा (जीडीएमओ) गिरोह किसी भी किमत पर इस मेडिकल कॉलेज को चलने नहीं देना चाहता था। इस गिरोह को 2012 से 2015 तक महानिदेशक रहे अनिल कुमार का पूरा संरक्षण प्राप्त था। लेकिन अनिल के जाते ही दीपक कुमार ने कार्यभार सम्भालते ही भाग-दौड़ करके इस मेडिकल कॉलेज को ठीक वैसे ही चालू कराया जैसे चलती ट्रेन का अंतिम डिब्बा किसी मुसाफ़िर के हाथ लग जाये। अनिल कुमार इतने निकृष्ट थे कि कोयम्बटूर जहां 8 लाख बीमाकृत श्रमिक है वहां का बना

डीजी मुखमीत सिंह

बनाया ईएसआई मेडिकल कॉलेज मुफ्त में यहां की सरकार को सौंप दिया। इसी तरह कोल्लम (केरल) का मेडिकल कॉलेज मुफ्त में वहां की सरकार को सौंप दिया। यह मजदूरों के साथ बहुत बड़ा विश्वासघात था। अच्छे एवं जनहितैषी महानिदेशकों की श्रेणी में अनुराधा प्रसाद का नाम लेना भी बहुत जरूरी है। बेशक वे बहुत कम समय तक इस पद पर रहीं लेकिन फ़िर भी उन्होंने मेडिकल कॉलेज की राह में रोड़े अटकाने वाले गिरोह की मुश्कें अच्छी तरह खींच कर रखी थीं। महानिदेशक भाटिया को मेडिकल कमिश्नर दीपक शर्मा से भी सावधान रहना होगा क्योंकि उनकी षडयंत्रकारी सोच में फेकल्टी को इधर-उधर बदल कर अच्छे-भले चल रहे कार्यक्रमों का बेड़ा गर्क करना शामिल है। उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं है कि इस कॉलेज में एक साथ इतने सारे सुपर-स्पेशलिटी इलाज चल रहे हैं।

हरियाणा के किसी भी सरकारी अस्पताल में कैंसर का इलाज नहीं है

वर्ष 1992-93 में रोहतक मेडिकल कॉलेज से डॉ. प्रताप सिंह गहलोत को बोन मैरो थेरेपी सीखने के लिये पेरिस भेजा गया था। करीब 9 महीने की ट्रेनिंग के बाद लौट कर आये डॉ. गहलोत ने जब यहां पर इलाज शुरू किया तो उन्हें न तो फेकल्टी का कोई सहयोग मिला और न ही सरकार का। लिहाजा रो-पीट कर दो-चार केस करने के बाद उन्होंने भी हाथ खड़े कर दिये।

9 मई 2022 को हरियाणा के स्वास्थ्यमंत्री अनिल विज ने राजनीतिक नौटंकी करते हुए अपने चुनाव क्षेत्र अम्बाला में 72 करोड़ की रकम खर्च करके एक ईमारत खड़ी करके उसे कैंसर सेंटर का नाम दे दिया। इस सेंटर में केवल दो-चार छोटी-मोटी सिकाई आदि के उपकरण रखे हैं। वहां पर न तो बोन मैरो ट्रांस्प्लांटेशन है और न ही पूर्ण रेडियो थेरेपी व कीमो थेरेपी है। सर्जरी का तो मतलब ही नहीं है। नाम रख दिया कैंसर सेंटर। हालात को देख कर समझा जा सकता है कि यहां कभी भी इससे अधिक कुछ होने वाला भी नहीं है। सर्वविदित है कि कैंसर के इलाज में कई ब्रांचों के डॉक्टरों को एक साथ जुटना पड़ता हैं, जो केवल मेडिकल कॉलेज में ही सम्भव हो सकता है।

पंजाब के स्वास्थ्यमंत्री ने अपने अस्पतालों....

पेज एक का शेष

का शिकार है। नि:संदेह पहले की पंजाब सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं के लिये पर्याप्त बजट तो नहीं ही रखा होगा लेकिन जितना भी रखा है उसमें भी हो रही सेंधमारी ने स्थिति को बद से बद्तर कर दिया है यानी कि कोढ़ में खाज वाला काम हो रहा है।

संदर्भवश यह एक स्नातकोत्तर मेडिकल कॉलेज है। यहां एमबीबीएस के बाद एमडी व एमएस आदि की पढ़ाई होती है। लेकिन यहां की स्थिति इतनी विकट हो चुकी है कि एमबीबीएस तक कि पढ़ाई करनी कठिन हो रही है। ऑपरेशन थियेटर में एसी की बात तो छोड़िये पर्याप्त रोशनी तक की व्यवस्था नही है। कई बार तो टार्च अथवा मोबाइल फोन की लाइट में भी ऑपरेशन सम्पन्न करने पड़ते हैं। डॉक्टरों का पसीना तक भी मरीज़ों के घाव पर गिरता रहता है। इसके अलावा एक्सरे, एमआरआई, कैटस्कैन, आदि मशीने कंडम हो चुकी हैं। स्टाफ़ भी आवश्यकता का एक चौथाई भर ही बताया जा रहा है। सफ़ाई का हाल ऐसा है कि बाथरूमों में घुसना तक मुश्किल है।

अनिल विज कब ध्यान देंगे ?

हरियाणा के अस्पतालों की स्थिति भी पंजाब वालों से बेहतर नहीं है। यहां पर भी लगभग यही सब कुछ हो रहा है जो वहां हो रहा है। लेकिन वहां के स्वास्थ्य मंत्री ने मौका मुआयना करके अधिकारी को शर्मसार करके बाहर का रास्ता तो दिखा दिया।

हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज यदा-कदा अपने अस्पतालों पर छापामारी की नौटंकी तो करते रहते हैं लेकिन कभी किसी वरिष्ठ नालायक अधिकारी के खिलाफ़ कोई कड़ी कार्रवाई होती नहीं देखी गई। फ़रीदाबाद के बीके अस्पताल को लेकर तो शायद ही कोई दिन निकलता होगा जब इसकी बदइंतजामी का ब्योरा न प्रकाशित होता हो।

रोहतक स्थित राज्य के सबसे पुराने मेडिकल कॉलेज से लेकर छांयसा स्थित नवीनतम मेडिकल कॉलेज सहित सभी भयंकर दुर्दशा के शिकार है। इसके बावजूद विज साहब चूं तक नहीं करते। करें भी क्यों, उन्हें जब भी इलाज की जरूरत होती है तो वे मोहाली से लेकर गुड़गांव तक के पंच सितारा व्यापारिक अस्पतालों में आकर दाखिल हो जाते हैं। जनता जाये भाड़ में उनकी बला से।

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर इसकी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या-451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad